ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 96-98

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

सामाजिकअवस्थामें वृद्धों का जीवन : एक चुनौती

प्रमिला पटेल

शोध अध्येत्री, समाजशास्त्र विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर (म0प्र0) भारत

Received- 07 .02.2022, Revised- 13 .02.2022, Accepted - 18.02.2022 E-mail: aaryavart2013@gmail.com

सारांशः – *सामाजिक परिवर्तन प्रकृति का नियम है। जिस बालक ने धरती पर जन्म लिया है, उसका वृद्ध होना स्वाभाविक है। मृत्यु दर मे कमी होने के कारण जीवन जीने की प्रत्याशा में वृद्धि हुई है। भारत सहित सभी विकासशील देशों में वृद्धजनों की संख्या में तेजी से वृद्धि हो रहे है। देश की आजादी के समय 27 लाख वृद्धजनों की संख्या थी, जो 1991 में बढ़कर लगभग डेढ़ करोड़ हो गई। 2011 में यह संख्या 8 करोड़ के करीब पहुँच गई। यदि ऐसे ही जनसंख्या बढ़ती रही तो सन 2025 तक यह बच्चों की जनसंख्या के दोगुने पर पहुँच जाएगी। बढ़ती हुई जनसंख्या और औद्योगीकरण ने हमारे जीवन मूल्यों को गहराई तक प्रभावित किया है। संयुक्त परिवार में विघटन एवं आर्थिक सामाजिक स्वतन्त्रता के चलते वृद्धजनों की स्थिति और दयनीय हो गई है। जो लोग चौराहे मंदिर में झुंड बनाकर रहते हैं उनको समाज महत्व नही देता है। अधिकांश बुजुर्ग अपना अधिकांश समय दिशाहीन में काट रहे हैं।*

भारतीय समाज की सबसे बड़ी समस्या वृद्धजनों की है और वे अलग–अलग समस्याओं से जूझ रहे हैं। जो बुजुर्ग कभी नौकरी पेशे में थे और आज पेन्शन ले रहे हैं उनकी समस्याएँ उन बुजुर्गों से भिन्न है जो नौकरी पेशे में नहीं हैं। नौकरी पेशे में न रहने वाले बुजुर्गों को परिवार की उपेक्षा का शिकार होना पड़ता है, जिसका लाभ उन्हें त्वरित मिल सके। जिन बुजुर्गों को पेंशन का लाभ मिल रहा है उनकी देखभाल करने वाले परिवार के सदस्य होते हैं।

कुंजीभूत शब्द– सामाजिक परिवर्तन, प्रकृति, प्रत्याशा, औद्योगीकरण, स्वतंत्रता, वृद्धजन, पाचन क्रिया, मिलेनोमा।

बुजुर्गों की एक प्रमुख समस्या स्वास्थ्य संबंधी होती है, क्योंकि बुढ़ापे में कान, नाक ,आँख तथा पाचन क्रिया संबंधी अनेक समस्या आ जाती हैं। जिससे उनकी चिंता बढ़ जाती है और वे तनाव में रहते हैं। कुछ बुजुर्ग रक्तचाप (ब्लड प्रैशर) के शिकार होते हैं और वे अक्सर दवाएं लेते रहते हैं। उच्च रक्तचाप के इलाज में दी जाने वाली दवाएं आमतौर पर बुजुर्गों के लिए खतरा पैदा कर सकती है। एक नए शोध में दावा किया गया है कि 66 वर्ष या इससे अधिक उम्र के लोगों में बीपी की इन दवाओं के कारण स्किन या त्वचा कैंसर का खतरा पैदा हो सकता है। globalnews-ca ने अध्ययन के हवाले से बताया कि लंबे समय तक हाइड्रोक्लोरोथियाजीड समेत थियाजाइड डाईयूरेटिक्स नामक उच्च रक्तचाप रोधी दवाओं के सेवन से मिलेनोमा और गैर मेलेनोमा जैसे दो तरह के स्किन कैंसर के खतरे का सामना करना पड़ सकता है। इन अध्ययन के नतीजों की कनाडाई मेडिकल असोशिएशन जर्नल (CMJ) में प्रकाशित किया गया है। उच्च रक्तचाप संबंधी दवाओं पर किए गए अध्ययन में बताया गया है कि दूसरी सामान्य दवाओं में इस तरह का जोखिम नहीं होता है।

वृद्धावस्था दिवस पर संयुक्त जिला चिकित्सालय के वृद्धावस्था वार्ड में सीएमओ डॉ. श्रीकांत वर्मा ने मरीजों को फल बांटा। बुजुर्गों के लिए ये खास दिन हर वर्ष पहली अक्टूबर को मनाया जाता है। इस दिनका उद्देश्य बुजुर्गों को प्रभावित करने वाली समस्या के बारे में जागरूकता फैलाना है। सीएमओ डॉ. श्रीकांत वर्मा ने बताया की यह दिन लोगों की भलाई, अधिकारों और विशेष जरूरतों पर केन्द्रित है। अब अधिक महत्वपूर्ण हो गया है कि वृद्ध लोग किस संघर्ष से गुजरते हैं। उनकी विशेष जरूरतों के बारे में भी जागरूक किया जाए।

बुजुर्ग आर्थिक समस्या का सामना तो कर रहे हैं साथ ही वे अपनी जिंदगी अकेलेपन में बिता रहे है। उनके साथ कोई बातचीत करने वाला नहीं होता है। लोग हालचाल नहीं पूछते हैं, दिनचर्या की चर्चा नहीं करते हैं। जिन बुजुर्गों में पति पत्नी में से किसी कि मृत्यु हो जाती है तो उनमे अकेला व्यक्ति और परेशान रहता है। हाल में इंदौर में निराश्रित बुजुर्गों को शहर में जबरन बाहर निकालने की घटना ने लोगों का ध्यान फिर से बुजुर्गों की ओर खींचा। बुजुर्गों की इस तरह अनदेखी–उपेक्षा के बीच पिछले दिनों में एक सुखद खबर भी आयी। एक महिला के पति की मृत्यु हो गई थी। बच्चे अपने–अपने परिवारों में व्यस्त थे। महिला नितांत अकेली थी,क्या करे। कोई सुख दुख बांटने वाला भी आसपास नहीं था। उसने सन्यास ले लिया और हरिद्वार चली आयीद्य वंहा वह साधुसंतों के बीच रहने लगी। वंही उसकी मुलाकात एक साधू से हुई। दोनों एक दूसरे को पसंद करने लगे, दूसरे साधू ने जब यह देखा तो उन दोनों का विवाह करा दिया। इसी तरह कुछ दिन पहले एक वृद्धाश्रम में रहने वाले दो बुजुर्गों ने भी विवाह किया। इन दिनों में होने वाले बहुत से ऐसे विवाह अपने देश में बदले हुऐ वक्त को बता रहे हैं। इन दिनों एक टूथपेस्ट के विज्ञापन में एक उम्र दराज महिला अपने बाल–बच्चों और अपने नाती–पोतों को खाने पर बुलाती है, वह बार–बार बाहर की ओर देखती है। मानों किसी के आने का इंतजार हो। थोड़ी देर के बाद एक बड़ी उम्र का

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

आदमी उसका कंधा थामता है और वह महिला अपनी अनामिका में पहनी अंगूठी उसे दिखाती है। यानी वह संबंध में है और उसने मंगनी की अंगूठी पहन ली है। यह देख कर बच्चे पहले चकित होते हैं, फिर खुशी मनाते हैं। विज्ञापन की आखिरी लाइन है दृ नई आजादी का जश्न।

दिलचस्प है कि एक और स्त्री विमर्श विवाह को एक गुलामी की तरह देखता है तो दूसरी तरफ बड़ी उम्र में दूसरा विवाह करने वाली महिला उसे दूसरी आजादी का जश्न कहती है। अगर ध्यान से देखें तो समाज में परिवर्तन तो आ रहा है मगर वह बहुत धीमा है, वैसे भी अपने देश में बुजुर्गों की आबादी बढ़ती जा रही है। 2011 की जनगणना के अनुसार 5 करोड़ 1000000 बुजुर्ग पुरुष और 5 करोड़ 3000000 बुजुर्ग महिलाएं हैं। ऐसे बुजुर्ग भी बहुतायत में हैं, जो जीवनसाथी की मृत्यु उससे अलगाव या बच्चों के कहीं दूर चले जाने के कारण अकेले रह गए हैं। इनकी संख्या डेढ़ करोड़ के आसपास है, अकेलापन इनकी बड़ी समस्या है इनकी बातें सुन ने बात करने के लिए किसी के पास समय नहीं है। बहुत से बुजुर्ग आर्थिक रूप से किसी पर निर्भर नहीं है, मगर सिर्फ पैसे से कुछ नहीं होता जबत क कि जीवन में किसी इंसान का सहाराना हो। अपने देश में इन दिनों बुढ़ापा काटना बहुत मुश्किल काम हो गय ा है। एक समय कहा जाता था कि महिलाएं क्योंकि घर में रहती हैं और घर में तमाम कामों को निपटाने में ही उनकी उम्र बीत जाती है, इसलि ए अगर वह अकेली रह भी जाए य तो भी अपना जीवन काट लेती हैं, लेकिन पुरुषों के लिए अकेलापन काटना एक भारी समस्या होत ा है। हालांकि सच्चाई यही है कि बदले वक्त में जब पुरुष और स्त्री विभिन्न कारणों से जीवन के चौथे पल में अकेले रह जाते हैं, तो उनका समय काटने नहीं कटता वे अकेले घर में रहे तो कब तक आखिर कितनी देर किसी से फोन पर बातें करें, टीवी देखें, फेसबुक पर रहे। बीमार पड़ जाते हैं तो और मुश्किल हो जाती है। कोई देखभाल करने वाला और अस्पताल पहुंचाने वाला तो चाहिए ऐसे में अकेलेपन और भविष्य में आने वाली विपत्तियों के डर से भी अवसाद के शिकार हो जाते हैं। बुजुर्गों के लिए काम करने वाली संस्था एज्वेल फाउंडेशन की रिपोर्ट बताती है कि हमारे यहां इन दिनों बुजुर्ग बेहद अकेले हैं, इसलिए यदि बहुत से बुजुर्ग अपने चौथे बन में भी साथी की तलाश कर रहे हैं। तो इसमें आश्चर्य क्या क्योंकि जब तक जीवन है, उसे ठीक से और खुशी से जीने की चाहट एक में हो सकती है। याद करें कि कुछ साल पहले मीडिया मुगल रिपोर्ट मॉडल ऑफ मॉडल जैसी हाल ने विवाह की घोषणा की थी। गुजरात के अहमदाबाद का एक संगठन है, बिना मूल्य– अमूल्य सेवा यह अकेले रह गए बुजुर्गों को मिलवाने के लिए सम्मेलन आयोजित कराया जाता है। उसमें आकर अकेले रह गए बुजुर्ग एक दूसरे से परिचय प्राप्त करते हैं,फिर पसंद आने पर यदि एक दूसरे से विवाह करना चाहते हैं तो उनका विवाह करा दिया जाता है। यदि वे विवाह ना करके लिव–इन में रहना चाहते हैं तो उसकी व्यवस्था भी की जाती है। अनेक बार इस सम्मेलन में बच्चे अपने माता–पिता को लेकर आते हैं, यहां आने वाले बहुत से बच्चे कहते हैं कि अपने माता–पिता का अकेलापन वे चाहकर भी दूर नहीं कर पाते। अपने–अपने काम धंधा और गृहस्थी की जिम्मेदारियों में फंसकर भी माता–पिता की समस्याओं को नहीं समझ पाते हैं । वैसे अगर चाहे भी तो साथी की कमी किसी तरह पूरी नहीं कर सकते, इसलिए भी है उनके लिए यहां साथी खोजने चले जाते हैं इस संगठन को चलाने वाले नाथू भाईलाल पटेल कहते हैं कि हर साल बुजुर्गों की ओर से आने वाले प्रार्थना पत्रों की संख्या बढ़ती ही जा रही है। पहले तीन हजार के करीब प्रार्थना पत्र आते थे अब यह संस्था बढ़कर 5000 तक जा पहुंची है ना तो भाई पूरे देश में घूम–घूम कर बुजुर्गों के लिए जीवनसाथी खोजने के लिए ऐसे सम्मेलन आयोजित करते हैं। वह इस काम को सबसे बड़ी सेवा मानते हैं। साफ है जब देश में बुजुर्गों की संख्या तेजी से बढ़ रही है तो उनका जीवन भी सुचारु रुप से चलें इसकी व्यवस्था करने के बारे में सोचा जाना चाहिए। बड़ों के हिस्से आया अकेलापन भी दूर होना चाहिए। औरों की तरह उन्हें भी सुख से जीने का पूरा अधिकार है।

बुजुर्ग सामाजिक असुरक्षा की भावना महसूस कर रहे हैं, जिसके कारण उनमें मानसिक विकृति कभी–कभी रिप्लाई देती है। संयुक्त परिवार प्रथा समाप्त होने से यह एक गंभीर समस्या बन गई है, बुजुर्ग महिलाए भी यौनशोषण का शिकार हो रही हैं। यह बड़े दुर्भाग्य की बात है, कि जो महिलाएं माता के समान है, उनको भी कुछ अराजक तत्व अपनी हवस का शिकार बना ले रहे हैं। अनुसूचित जाति की 60 साल की महिला को कुछ लोग सोते समय उठा ले गए। उसे बंधक बनाकर दुष्कर्म किया। हैवानियत की हदें पार करते हुए निजी अंग में मिर्च भर दी। पुलिस ने पीड़िता को जिला अस्पताल में भर्ती कराया। एसपी सुधा सिंह ने खुद पहुंचकर पीड़िता का बयान दर्ज किया। पुलिस ने नामजद मुकदमा दर्ज कर दो लोगों को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है। कबरही नगर क्षेत्र में 1 वार्ड में शनिवार रात 60 साल की महिला को चार–पांच लोग घर से बाहर सोते समय उठा ले गए। सुबह उसके बगल में चारपाई पर लेटी पौत्रों ने खोजबीन शुरू की। थोड़ी देर बाद घर के बगल में खाली पड़े मकान में महिला बेहोशी हालत में पड़ी मिली। उसके हाथ पैर बंधे हुए थे। कबरई पुलिस ने पीड़िता को जिला अस्पताल में भर्ती कराया। अस्पताल में महिला ने एसपी को बताया कि प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत उसे मकान बनाने

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

की धनराशि मिली थी। पड़ोसी भारत कुशवाहा से मकान की जगह को लेकर विवाद चल रहा है। वह लगातार उसे खाली कराने को लेकर दबाव बना रहा था। शनिवार शाम को से झगड़ा हुआ था। 4 दिन पहले भी उसने मारपीट की थी। उसने अपने साथियों के साथ मिलकर दुष्कर्म किया और मारा पीटा भी है। आरोप लगाया कि निजी अंग में मिर्ची या कोई ज्वलनशील पदार्थ डाला है। एसपी ने बताया कि महिला के बयानों के आधार पर मेडिकल परीक्षण कराया जा रहा है। कबरई थाना प्रभारी दिनेश सिंह ने बताया कि पीड़िता की तहरीर पर भारत कुशवाहा के खिलाफ बंधक बनाकर दुष्कर्म करने वाली एसटी एक्ट के तहत मुकदमा लिखा गया है। आरोपित भारत समेत दो लोगों क ो हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है। कड़ी कार्रवाई की जाएगी बुजुर्ग नई पीढ़ी के साथ स ामंजस्य नहीं बिठा पा रहे हैं। वह पुरानी बात और पुरानी सोच को लेकर चलते हैं जबकि युवापीढ़ी अपने भविष्य को देखता है। अर्थात बुजुर्ग बीती हुईबातों परध्यान देत`हैं जबकि युवा अपने भविष्य की बात सोचते हैं। अब परिवार के सदस्यों में नैतिकता का पतन हो रहा है। बुजुर्ग का अब परिवार में कोई सामाजिक मूल्य नहीं रह गया है। लोग अपने सामाजिक मूल्यों को भूल गए हैं, उनमें मानवीय व्यवहार की कमी देखी जा रही है। भारत में कर्म को ही धर्म माना गया है, लेकिन आज इसका लोप होता जा रहा है। आज का मानव इतना व्यक्तिवादी, सुखवादी एवं भोगवादी हो गया है कि वह सही गलत नैतिक अनैतिक एवं शिष्ट–अशिष्ट को भूल गया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. कुरुक्षेत्र पत्रिका 2016, पृष्ठ– 29
2. कुरुक्षेत्रपत्रिकानवंबर 2000,पृष्ठ– 30

*****